सात तत्त्व और कर्म सिद्धान्त –1

डॉ. पारसमल अग्रवाल

Dr. Paras Mal Agrawal

Visiting Professor and Research Prof. (Retd.)

Oklahoma State University

Stillwater OK 74078 USA, and

Professor of Physics (Retd.)

Vikram University, Ujjain MP INDIA

आधुनिक विज्ञान + आत्मा का अस्तित्व = जैन दर्शन ??

Supporting logic?

*** No need of controller**

***Automatic. Events happen in lawful way**

***No lawlessness**

Need of philosophy; Need of soul

***दर्शन विज्ञान says ‘yes’ to**

सुख, दु:ख, घृणा, प्रेम, करूणा, क्षमा ....

*** आधुनिक विज्ञान (भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, भूगर्भ विज्ञान) says ‘NO’ to (or is silent about)**

सुख, दु:ख, घृणा, प्रेम, करूणा, क्षमा ....

इस तरह के कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य :

* स्वयं के जीवन में परिवर्तन
- निर्भयता, करूणा, अविजेयता
- ''मेरा सब कुछ लूट गया'', यह मन में न आवे,
- असंभव, यह मन में कभी भी न आवे,
- ''मैं किसी से कम नहीं'' के साथ–साथ
  ''मैं किसी से ज्यादा नहीं'' भी मन में रहे।

स्वतंत्रता का मार्ग या सुख का मार्ग या मोक्ष का मार्ग

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः। (तत्वार्थसूत्र 1.1)

अर्थ: सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यग्चारित्र (मिलकर) मोक्षमार्ग हैं।

Author of तत्वार्थसूत्र: आचार्य उमास्वामी (दिगम्बर परम्परा) आचार्य उमास्वाति (श्वेताम्बर परम्परा)

Order/Sequence

*तत्वों की समझ

* तत्वों की सच्ची समझ, सच्चा श्रद्धान, पक्का विश्वास = सम्यग्दर्शन + सम्यग्ज्ञान

* सम्यग्चारित्र (अणुव्रत पालन – महाव्रत पालन)

*Note: सम्यक्दर्शन एवं सम्यक्ज्ञान साथ–साथ। सम्यक्दर्शन कारण है एवं सम्यक्ज्ञान कार्य। दीपक के जलते ही प्रकाश। दोनों साथ–साथ किन्तु दीपक का जलना कारण एंव प्रकाश कार्य।

* सम्यक् कारण जान ज्ञान कारण है सोई। युगपत होते हू प्रकाश दीपक से होई (Reference. Chhahadhala)

सम्यग्दर्शन एवं सम्यक्ज्ञान

सम्यग्दर्शन के बिना व्रतों का महत्व बहुत कम होता है। आत्मा की सच्ची समझ के बिना सम्यग्दर्शन नहीं। आत्मा की समझ के लिये सात तत्त्वों की समझ महत्वपूर्ण।

सम्यग्चारित्र (अणुव्रत पालन – महाव्रत पालन)

महाव्रत पालने वाले साधु या सन्त या मुनि कहलाते हैं।

णमो आयरियाणं। आचार्यों को नमस्कार हो। णमो उवज्झायाणं। उपाध्यायों को नमस्कार हो। णमो लोए सव्व साहूणं। लोक में समस्त साधुओं को नमस्कार हो।

जीवाजीवाश्रव बंध संवर निर्जरा मोक्षास्तत्वं।

(तत्वार्थसूत्र 1.4)

अर्थ: जीव, अजीव, आश्रव, बंध, संवर, निर्जरा , मोक्ष ये सात तत्व हैं।

सात तत्व = जीव , अजीव, आश्रव, बंध, संवर,
निर्जरा , मोक्ष

नव तत्व = उपर्युक्त सात + पुण्य + पाप
= नव पदार्थ

पुण्य–पाप आस्रव में गर्भित

पुण्य– आस्रव, पाप–आश्रव,

पुण्यास्रव, पापास्रव,

पुण्य–पाप बंध में गर्भित,

पुण्य बंध, पाप बंध

सात तत्व – विहंगम दृष्टि

(1) जीव – आत्मा (निश्चय), Living Beings (व्यवहार)

(Chapter 2-4 of तत्वार्थसूत्र)

(2) अजीव – भौतिक पदार्थ (5 प्रकार के)

(पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल)

(Chapter 5 of तत्वार्थसूत्र)

(3) आस्रव – मन, वचन, काय योग से कर्म/संस्कार को आत्मा से बंधने का निमंत्रण

(Chapter 6-7 of तत्वार्थसूत्र)

(4) बंध – कर्म/संस्कारों का आत्मा से बंधन

(Chapter 8 of तत्वार्थसूत्र)

(5) संवर – कर्मों का आगमन रूकना कर्मों को निमंत्रण न देना।

(Chapter 9 of तत्वार्थसूत्र)

(6) निर्जरा – पूर्व बंधे हुए कर्मों का आत्मा से खिर जाना (आंशिक/पूर्ण) या क्षय हो जाना।

(Chapter 9 of तत्वार्थसूत्र)

(7) मोक्ष – सम्पूर्ण कर्मों का क्षय होने के बाद शुद्ध आत्मा हो जाना यानी सिद्ध हो जाना।

(Chapter 10 of तत्वार्थसूत्र)

More about जीव:

* निश्चय से जीव – आत्मा,
* व्यवहार से जीव – जीवधारी,

जीवधारी

*मनुष्य 5 इन्द्रिय (स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण),
* स्थावर (1 इन्द्रिय), त्रस (2 से 5 इन्द्रिय),
* देव – 5 इन्द्रिय, नारकी – 5 इन्द्रिय,
* तिर्यंच – 1 से 5 इन्द्रिय,
* मन केवल पंचेन्द्रिय के
* मन सहित – संज्ञी, मन रहित – असंज्ञी

(Chapter 2 of तत्वार्थसूत्र)

More about अजीव

*पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल

* पुद्गल – टेबल, वस्त्र, बरतन, परमाणु, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन आदि।

* धर्म, अधर्म, आकाश, काल To be discussed in other lecture

(Chapter 5 of तत्वार्थसूत्र)

आस्रव :

*वासनाएँ, इच्छाएँ, राग, द्वेष – भावास्रव।

* द्रव्यास्रव = कर्म वर्गणा का आस्रवण (आगमन)।

बंध :

* संस्कारों का बंधना – भाव बंध।

* कर्मबंध = द्रव्य बंध

* आत्मिक अज्ञानता, अव्रत, प्रमाद, कषाय, योग से बंध होता है।

4 कषाय: क्रोध, मान, माया, लोभ

3 योग: मन से, वचन से, काय से

(More in other lecture)

~~कषाय नहीं हो तो बंध नहीं होता है।~~

~~अरहंत के आस्रव होता है किन्तु कषाय नही होने से बंध नहीं होता है।~~

~~आस्रव एवं बन्ध दो रूपों में पुण्यास्रव एवं पुण्यबंध, पापास्रव एवं पापबंध~~

~~शास्त्रीय परिभाषा मन्द राग — पुण्य~~

~~द्वेष एवं तीव्र राग — पाप~~

पुण्य :

* परोपकार,
* विकसित आत्माओं की तरफ ध्यान/भक्ति

पाप :

* दूसरों को एवं स्वयं को पीड़ा देना।
* पाप के 5 प्रकार – हिंसा, झूंठ, चोरी, कुशील, परिग्रह

हिंसा

* आरम्भी/उद्योगी, विरोधी, संकल्पी
* गृहस्थ को संकल्पी हिंसा नहीं होना चाहिये।
* अन्य हिंसा भी कम से कम।

झूंठ, चोरी, कुशील

परिग्रह

* अंतरंग परिग्रह (मिथ्यात्व, कषाय, नोकषाय)
* बहिरंग परिग्रह (धन, आदि)

पापों से निवृत्ति:

* एकदेश निवृत्ति – अणुव्रत
* सर्वदेश निवृत्ति – महाव्रत

* 5–अणुव्रत (अहिंसा, सत्य, अचौर्य, शील, परिग्रह परिमाण)
* 5–महाव्रत (अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह)

संवर

* पुण्य एवं पाप का अभाव
* जिन पुण्य पाप नहीं कीना, आतम अनुभव चित दीना
  तिन ही विधि आवत रोके, संवर लहि सुख अवलोके।

(Reference: छहढाला, ढाल क्रमांक 5)

निर्जरा

*सविपाक निर्जरा : हर समय पुराने बंधे हुए कर्मों का एक अंश फल देकर खिर रहा है। क्षय हो रहा है, निर्जरित हो रहा है, नष्ट हो रहा है। इस निर्जरा को सविपाक निर्जरा कहते हैं।

इस स्थिति में इस समय वापस नये कर्म बंध भी जाते हैं।

निज काल पाय विधि झरना, तासों निज काज न सरना।

(Reference: छहढाला, ढाल क्रमांक 5)

अविपाक निर्जरा : तपस्या द्वारा पुराने कर्मों का क्षय होना। जो कर्म उदय में नही ंआ रहे हैं उनका भी एक अंश तपस्या द्वारा क्षय हो सकता है।

तपस्या का अभिप्राय :

इच्छा निरोधस्तपः।

संवरपूर्वक निर्जरा

पाप– पुण्य न करते हुए आत्मा में लीन होना तपस्या है। लगातार होते रहना दुर्लभ है। क्षणिक भी लाभदायक है।

मोक्ष

8 कर्मों से रहित अवस्था को मोक्ष अवस्था कहते हैं।

8 कर्म = चार घातिया कर्म + चार अघातिया कर्म

चार घातिया कर्म

ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अंतराय

अघातिया कर्म

वेदनीय, आयु, नाम, गोत्र

अरहंत अवस्था

*निर्जरा होते–होते पहले चार घातियों कर्मों का क्षय होता है। चार घातिया कर्मों से रहित अवस्था को अरहंत अवस्था कहते है।

*णमो अरहंताणं। अरहंतों को नमस्कार हो।

* ज्ञानावरणीय के क्षय से केवलज्ञान होता है।

* केवलज्ञानी भूत, भविष्य, वर्तमान की सभी पर्यायों को जानते हैं।

* केवलज्ञानी को किसी भी पर्याय से यानी किसी से भी राग–द्वेष नहीं होता है।

* अरहंत को अरहंत भगवान या सकल परमात्मा भी कहते हैं।

* उनके उपदेश को दिव्यध्वनि कहा जाता है।

* तीर्थंकर अरहंत की धर्मसभा को समवशरण कहा जाता है।

* जब ऋषभदेव अरहंत बने तब वे तीर्थंकर अरहंत कहलाये।

* जब भरत अरहंत बने तो वे (सामान्य) अरहंत कहे गये।

*अरहंत के चार कर्म बच रहते हैं। ये बचे हुए कर्म आत्मा के गुणों का घात नहीं करते हैं अतः अघातिया कर्म कहलाते हैं।

* अरहंत के आयुकर्म पूर्ण होने के बाद सभी कर्मों का क्षय हो जाता है।

सिद्ध अवस्था

*आठों कर्म से रहित अवस्था सिद्ध अवस्था।

*यह मुक्त अवस्था है।

* सिद्ध आत्मा को सिद्ध भगवान या सिद्ध परमात्मा भी कहा जाता है।

* सिद्ध आत्माएँ सिद्धालय में निवास करती हैं।

* एक बार सिद्ध अवस्था प्राप्त होने पर फिर नवीन कर्म नहीं बंधते हैं।

* णमो सिद्धाणं। सिद्धों को नमस्कार हो

Bibliography for first three lectures

1. Acharya Tulsi, Jain Tattva Vidya (Adarsh Sahitya Sangh, New Delhi, 2012)
2. Pt. Kailash Chandra Shastri, Jain Siddhant (Bharatiya Gyanpith, 2001).
3. R. K. Jain, Jain Dharma aur Vishva Shanti (Prakrit Bharti Academy, Jaipur, 2007).
4. Muni Praman Sagar, Jain Dharma aur Darshan (Rajpal and Sons, Delhi, 1996).
5. Shekhar Chandra Jain, Jain Dharma Janiye (Gyan Prakashan, Jaipur, 2011).
6. तत्त्वार्थसूत्र, आचार्य उमास्वाति/स्वामी,
   विवेचक पं. सुखलाल संघवी, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणासी, 2007
7. तत्त्वार्थसूत्र, Commentary by Puja-Prakash Chhabra (110 Kanchan Bag Indore, 2010)
8. Any version of Tattvarth Sutra.
9. डॉ. नारायण लाल कछारा, जैन कर्म सिद्धान्त, अध्यात्म और विज्ञान–एक विश्लेषण (उदयपुर, 2004) Page 13 to 34.
10. Pt. Ratan Lal Shastri, Jain Karma Anuchintan (Indore, 2000)

11. Jinendra Varni, Karma Siddhant, (Jinendra Varni GranthaMala, Panipat, 2011).
12. N. L. Jain, Jaina Karmology (Parshvanath Vidyapith, Varanasi, 1998).
(In English)
13. Kirit Gosaliya, Primer of Jain Principles, English Translation of Laghu Jain Siddhant Praveshika by Pt Gopaldasji Baraiya (Teerthdham Mangalayatan, 2003).
14. Pt Gopaldasji Baraiya, Jain Siddhant Praveshika (Jabalpur, 1978).
15. Acharya SamantaBhadra, Ratnakaranda Shravakachar, Hindi version (Jabalpur, 1974).

THAT YOU